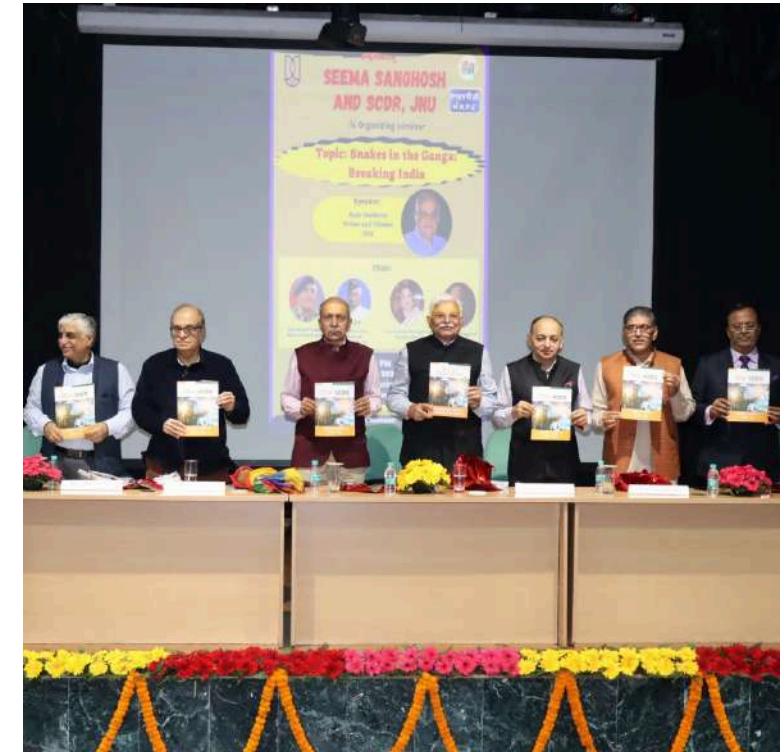


सुरक्षित सीमा

वंदेमातरम्

समर्थ भारत

सीमा जागरण मंच, दिल्ली



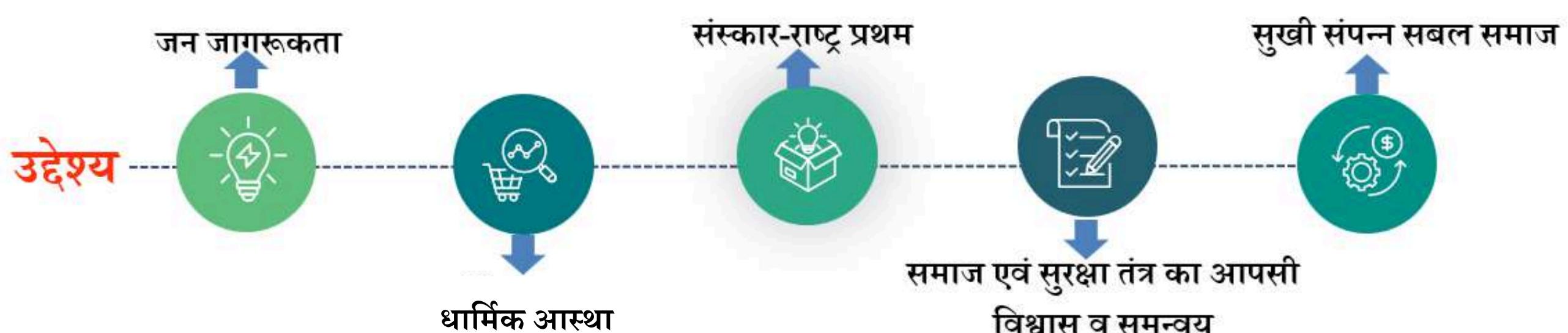
“देश की सीमाएं माता के वर्षों के समान होती हैं। उनकी रक्षा पुत्र का प्रथम कर्तव्य है।” - भीष्म पितामह

परिचय

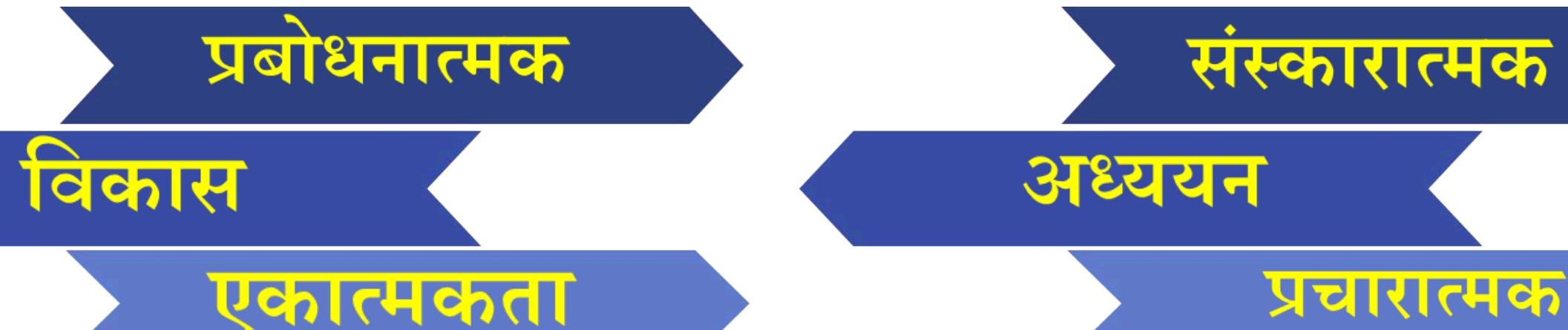
किसी राष्ट्र की संप्रभुता एवं स्वतंत्रता की शक्ति स्रोत होती है, उसकी सुरक्षित और सशक्त सीमाएँ। आज हम सुरक्षा को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं, इसमें राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए सीमा सुरक्षा की सुनिश्चितता को प्रथम चरण समझा जाता है। भारत की सीमाएँ न केवल सुविस्तीर्ण हैं (स्थलीय सीमा: 15106.7 किमी, सागरीय सीमा: 11,098 किमी) अपितु उनमें अद्भुत रूप से भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता है। बिना नागरिक-समाज को साथ लिए इसकी समूची सुरक्षा के दायित्व का निर्वाह संभव नहीं। इसी महत्ती उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1985 में रामनवमी के शुभ अवसर पर राजस्थान में 'सीमा जागरण मंच' की स्थापना की गई। स्थापना के पश्चात् यह संगठन चरणबद्ध रूप से देश के सभी सीमावर्ती राज्यों में विस्तार प्राप्त करता गया। वर्तमान में यह मंच भारत के 24 सीमावर्ती राज्यों में विभिन्न स्वरूपों में सक्रिय है।

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली की सामरिक महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए वर्ष 2016 में इसका विस्तार यहाँ भी किया गया, जहाँ यह संगठन बहुआयामी गतिविधियों के माध्यम से सतत कार्यरत है। दिल्ली न केवल नीति निर्माण और क्रियान्वयन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ सीमावर्ती राज्यों से आए नागरिकों की बड़ी संख्या इसे 'लघु भारत' के रूप में भी प्रतिष्ठित करती है। इसी सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता और नीति-निर्माण तंत्र के बीच 'सीमा जागरण मंच' संपर्क, संवाद और समन्वय के माध्यम से सीमाओं की सुरक्षा को जनभागीदारी से सशक्त बनाने का प्रयास कर रहा है।

उद्देश्य



कार्य की दिशा



कार्यक्रम और गतिविधियाँ :



हमारे उपक्रम

मंथन

- स्वावलंबन व स्वरोजगार
- शिक्षा
- चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
- पर्यावरण
- सामूहिक ग्राम उपयोगी कार्य

अध्ययन

- सीमा प्रबंधन और जागरूकता
- सीमा अवसंरचना और नागरिक विकास
- सीमा सुरक्षा और नागरिक सहभागिता
- स्थलीय, सागरीय सीमा अध्ययन
- नीति निर्माण में शोध-सहयोग

विमर्श

- सीमा संवाद
- महाविद्यालय स्तर पर संगोष्ठी
- अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन
- सीमा संघोष
- राष्ट्रीय सुरक्षा पर पॉडकास्ट

प्रमुख चुनौतियाँ :

अवैध घुसपैठिए, सीमा पर डेमोग्राफिक बदलाव



01

सरकारी भूमि का अतिक्रमण



02

तस्करी (मानव, ड्रग्स, हथियार, अन्य), नकली मुद्रा, अवैध व्यापार से राजस्व की हानि



03

ड्रोन व सुरंग के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरा



04



05

सीमा पार से प्रायोजित उग्रवाद, अलगाववाद, आतंकवाद



06

सीमान्त क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं का आभाव



07

सुरक्षा के प्रति उदासीनता



08

सीमान्त नागरिकों का पलायन

मंच के कार्य का परिणाम

सीमा सुरक्षा के लिए अखिल भारतीय संगठन बनाना



शासन प्रशासन एवं सुरक्षा एजेंसी के साथ में सहयोग सम्बन्ध बढ़ा



आम नागरिकों में सीमा के प्रति जिम्मेदारी एवं लगाव बढ़ा



रक्षाबंधन कार्यक्रम के माध्यम से समाज और सुरक्षाबलों के बीच समन्वय



सीमा-सुरक्षा के गलत नैरीतिव का प्रयास किया तथा समाज द्वारा चुनौती तारबन्दी एवं प्रथम गांवों में बंकर्स बनवाए



आह्वानः

भारत युगों से ही अनेक आक्रमणों और सामरिक चुनौतियों को झेलते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने में सफल रहा है। वर्तमान समय में एक बार फिर से भारत की सामरिक स्थिति पर सीमाओं के अतिक्रमण के माध्यम से आघात करने का प्रयास हो रहा है। आईये सीमा जागरण मंच से जुड़ कर हम सभी राष्ट्र युग धर्म के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा को नई मजबूती प्रदान करें।

“हे मातृ-भूमि तेरे लिये मरना ही जीना है और तुझे भूलकर जीना भी मरना है” -स्वातंत्र्य वीर सावरकर

-: छायाचित्र दीर्घा :-

सीमा मंथन



सीमा संवाद



सीमा दर्शन



प्रचार आयाम



सीमा जागरण मंच, दिल्ली रजि. 1658/2018

प्रधान कार्यालय :
प्रवासी भवन, 50 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
मंडी हाउस, दिल्ली - 1100002
संपर्क : 011- 43685793, +91-9667906610



<https://seemajagranmarch.com/>

@seemasanghosh